DOCKET NO.
G-4/1938
12 NOV 1938

SECRET

ब्रिटिश राज की गुप्त फ़ाइलें: गोलियों से लेकर रेज़र तक

यूनाइटेड प्रोविंसेस (1937–1939) के जेल अपराधशास्त्रीय अंतर्दृष्टि द्वारा: डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

FILE NO. 972/VI-254-1930 | ARCHIVAL RECOVERY

DOCKET NO.
G-4/1938
12 NOV 1938

SECRET

ब्रिटिश राज की गुप्त फ़ाइलें: गोलियों से लेकर रेज़र तक

यूनाइटेड प्रोविंसेस (1937–1939) के जेल प्रशासन के ऐतिहासिक दस्तावेज़।

FILE NO. 972/VI-254-1930 | ARCHIVAL RECOVERY

1939: गोला-बारूद की आपूर्ति और सुरक्षा पर नियंत्रण

1939 में, संयुक्त प्रांत (United Provinces) की सरकार ने पाया कि आदिवासी समुदाय फायरिंग रेंज से अप्रयुक्त और इस्तेमाल की गई .303 गोलियां इकट्ठा कर रहे थे ताकि उनका उपयोग दोबारा गोला-बारूद बनाने के लिए किया जा सके। इसे रोकने के लिए, सरकार ने 'लेड पिकिंग' और रेंज की निगरानी के लिए सख्त निर्देश जारी किए।

मुख्य समस्या: गोला-बारूद का पुन: उपयोग

अवैध निर्माण का एकमात्र स्रोत

फायरिंग रेंज से गोलियों की चोरी: आदिवासी लोग फायरिंग रेंज से अप्रयुक्त और लगभग बिना क्षति वाली .303 गोलियां इकट्ठा कर रहे हैं।

चूकि आदिवासी कारखाने नई गोलियां बनाने में असमर्थ हैं, इसलिए इस्तेमाल की गई गोलियां ही उनके गोला-बारूद का मुख्य स्रोत हैं।

समाधान: सुरक्षा और संग्रह के नए नियम

पूर्व सैनिकों की नियुक्ति: रेंज चौकीदार के रूप में केवल उन पूर्व सैनिकों को रखा जाए जिनके चरित्र का सत्यापन पुलिस द्वारा किया गया हो।

सख्त रिकॉर्ड और जवाबदेही: बरामद सीसे का वजन किया जाएगा और संग्रह की मात्रा का सटीक रिकॉर्ड रखा जाएगा।

तत्काल "लेड पिकिंग" (Lead Picking): फायरिंग के तुरंत बाद फायरिंग पार्टी द्वारा ही सीसा (Lead) इकट्ठा किया जाना चाहिए, इसे चौकीदारों पर नहीं छोड़ना चाहिए।

समय, स्थान और प्रशासन

चित्र 1: भारत 1930 के दशक में - यूनाइटेड प्रोविंसेस चिह्नित।
(FIGURE 1: INDIA 1930s – UNITED PROVINCES MARKED.)

1937 → 1937: प्रांतीय स्वायत्तता की शुरुआत।

1938 → 1938: जेल सुधारों का प्रस्ताव।

1939 → 1939: द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ, आपातकालीन उपाय।

कालखंड: 1930 का दशक
स्थान: यूनाइटेड प्रोविंसेस (United Provinces)
मुख्य अधिकारी: लेफ्टिनेंट-कर्नल एच. एम. सलामत उल्लाह (Lieut.-Col. H. M. Salamat Ullah), जेल महानिरीक्षक (I.G.)

ये दस्तावेज़ एक अनोखी प्रशासनिक कहानी कहते हैं—कैसे एक साम्राज्य ने एक ही समय में 'बड़ी राष्ट्रीय सुरक्षा' (Macro) और 'छोटी दैनिक जरूरतों' (Micro) को समान गंभीरटी से संभाला।

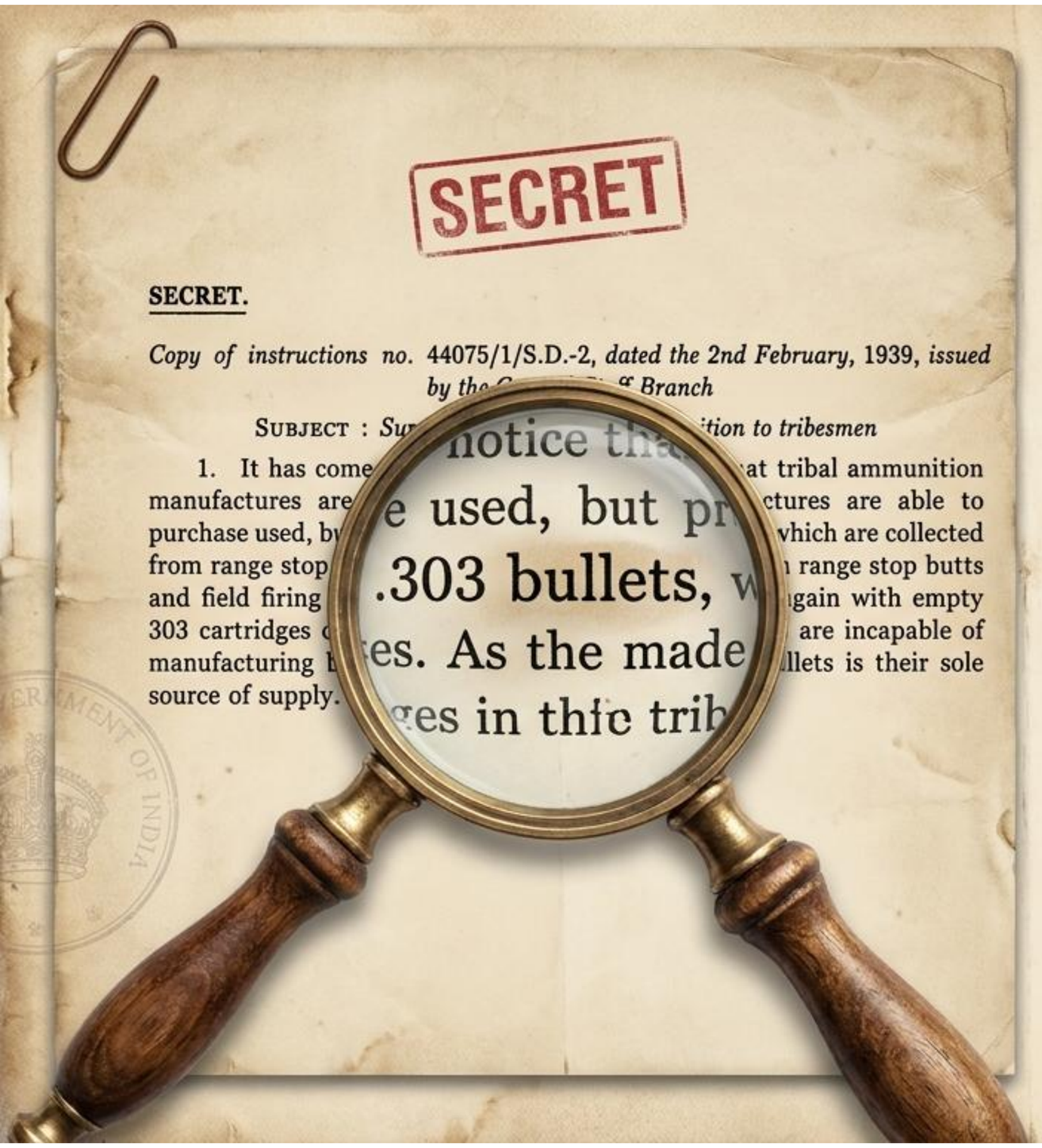

दस्तावेज़ 1: 1939 का गुप्त परिपत्र

दिनांक: मई 1939 (मूल सेना निर्देश: फरवरी 1939)

मुद्दा: जनजातीय (Tribal) क्षेत्रों में हथियारों का अवैध निर्माण रोकना।

खतरा: खुपिया रिपोर्टों से पता चला कि जनजातीय गोला-बारूद कारखाने पुरानी, बिना टूटी हुई .303 गोलियों (undamaged .303 bullets) का उपयोग करके नए कारतूस बना रहे थे।

खतरे की आपूर्ति श्रृंखला

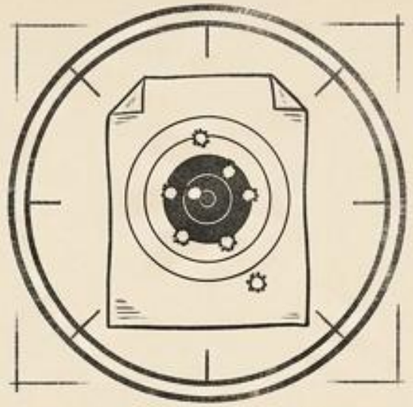

Step 1: फायरिंग रेंज पर सैन्य अभ्यास

Step 2: इस्तेमाल की गई लेकिन साबुत .303 गोलियां मिट्टी में छूट जाना

Step 3: अनाधिकृत लोगों द्वारा 'सीसा' (Lead) और गोलियां इकट्ठा करना

Step 4: जनजातीय कारखानों में खाली कारतूसों के साथ फिर से निर्माण

SECRET

सैन्य हस्तक्षेप और शमन

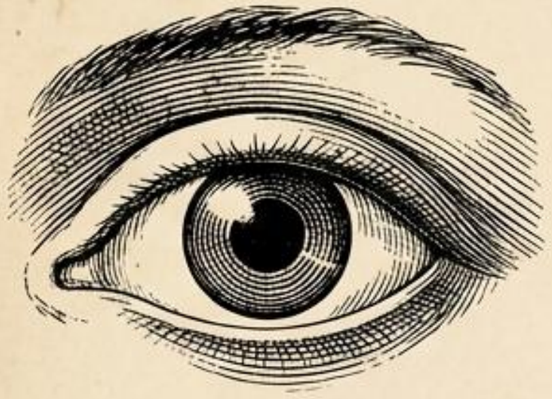

तत्काल पर्यवेक्षण

फायरिंग के तुरंत बाद 'लीड पिकिंग' (Lead picking) की जानी चाहिए। इसे केवल रेंज के चौकीदारों पर नहीं छोड़ा जा सकता।

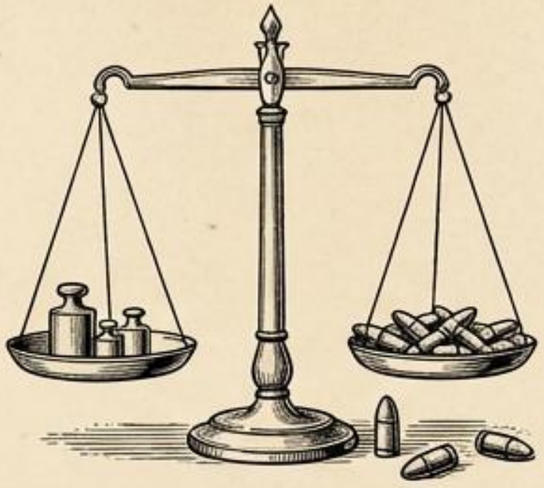

सख्त हिसाब-किताब

बरामद किए गए सीसे का वजन किया जाएगा और रिकॉर्ड रखा जाएगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उचित मात्रा वापस मिल गई है।

पुलिस सत्यापन

चौकीदार यथासंभव पूर्व-सैनिक (ex-soldiers) होने चाहिए। उनका पुलिस चरित्र सत्यापन अनिवार्य है। ठेकेदारों का उपयोग सख्त वर्जित है।

जेल विभाग में क्रियान्वयन

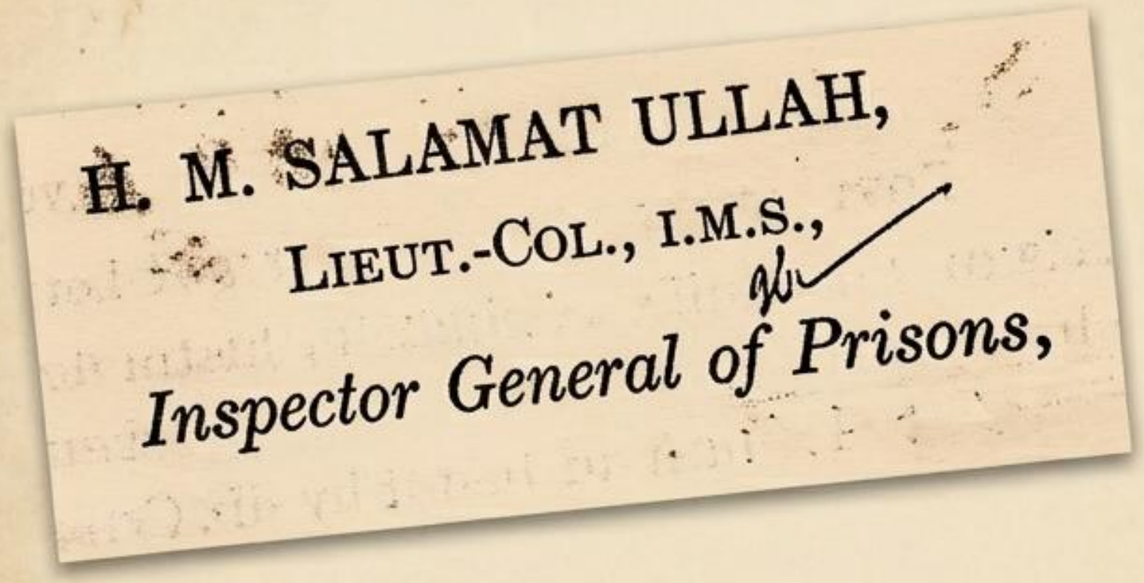

General Staff Branch
↓
Government of UP
↓
IG Prisons
↓
Jail Warder

सेना के ये निर्देश केवल छावनियों तक सीमित नहीं रहे; वे वे जेल की चारदीवारी तक भी पहुंचे।

जेल महानिरीक्षक का स्पष्ट आदेश: जेलों के 'रिजर्व हेड वार्डर' (Reserve Head Warder) बिना क्षतिग्रस्त गोलियों और सीसे को इट्ठकरने और उसके सुरक्षित निपटान के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे।

मैक्रो (Macro): 1939 - साम्राज्य की सुरक्षा और गोला-बारूद नियंत्रण।

माइक्रो (Micro): 1937 - दैनिक दिनचर्या और कैदियों के उस्तरे का रखरखाव।

जहां 1939 का परिपत्र विद्रोहियों के बारे में था, वहीं ठीक दो साल पहले का एक दस्तावेज़ हमें औपनिवेशिक प्रशासन के 'सूक्ष्म प्रबंधन' (Micro-management) की एक पूरी तरह से अलग तस्वीर दिखाता है...

CIRCULAR MEMO.

No. 92C-(19)PC OF 1937

FROM

LIEUT.-COL. H. M. SALAMAT ULLAH,
M.C., K.I.H., F.R.C.P.I., F.R.F.P.E., L.M.S.,
INSPECTOR GENERAL OF PRISONS,
UNITED PROVINCES,

To

ALL SUPERINTENDENTS OF JAILS,
UNITED PROVINCES.

Dated Lucknow, October 23, 1937.

SUBJSCT :—*Maintenance and use of San*

This office circular memo, no. 71 of 1936.

Has the honour to issue the following instructions for the maintenance and use of San.

(1) The San should be put on two straight page and seen by pulling leather straps whether it moves straight. If the San is straight then first hold the handle of razor in your right hand and put the blade of razor-on San with the thumb of the other hand. Take care that the blade gets clean from one end to the other. When one side gets clean the blade should be turoed and cleaned in the same way. It should be sharpened on both sides slowly and lightly. The brick which is placed under the San should be held fast with both fect wihle the San is in motion.

(2) If the San gets black on edges the razor should be taken off and the San should he moved on the brick for a little while till it becomes bright.

(3) If the San becomes unvevo remove the roller from the San and place it in the san either on an even plank or a stone equal to the circumference of the San. When the San sets right on the plank cool it by pouring a little cold water on it.

(4) If the San gets cracked put a hot iron " patti " in the cavity and put another hot iron " patti " over the cracked spot. The cracked spoce will join.

(5) If the sdges of the San get spoiled put the San on pegs, move it slowly by putting a heated iron " patti " held along with the brick underneath. When the edges become even, cold water should be poured on San gently to cool it. Finally put a brick underneath and move the San to clean its edges.

A copy of instructions in Urdu is also enclosed for guidance.
An acknowledgment is requested.

H. M. SALAMAT ULLAH,
LISUT.-COL, I.M.S.,
Inspector General of Prisons,
United Provinces.

दस्तावेज़ 2: 'सान' पर 1937 का परिपत्र

दिनांक: 23 अक्टूबर, 1937

विषय: 'सान' (San – रेज़र तेज करने का पत्थर) का रखरखाव और उपयोग।

संन्दर्भ: यह दस्तावेज़ स्पष्ट करता है कि ब्रिटिश राज में जेल के भीतर उपकरणों के उपयोग के नियम कितने विस्तृत, सख्त और प्रक्रिया-उन्मुख (process-oriented) थे।

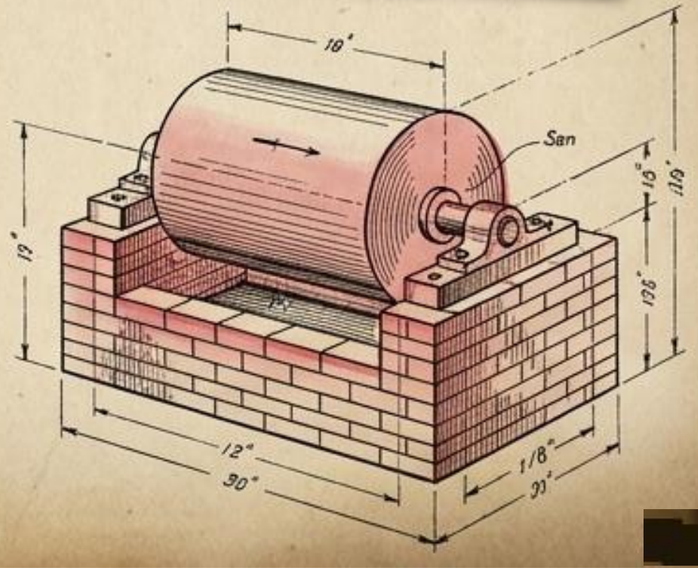

दृश्य मैनुअल: सान का उपयोग

Step 1: सीधाई की जांच

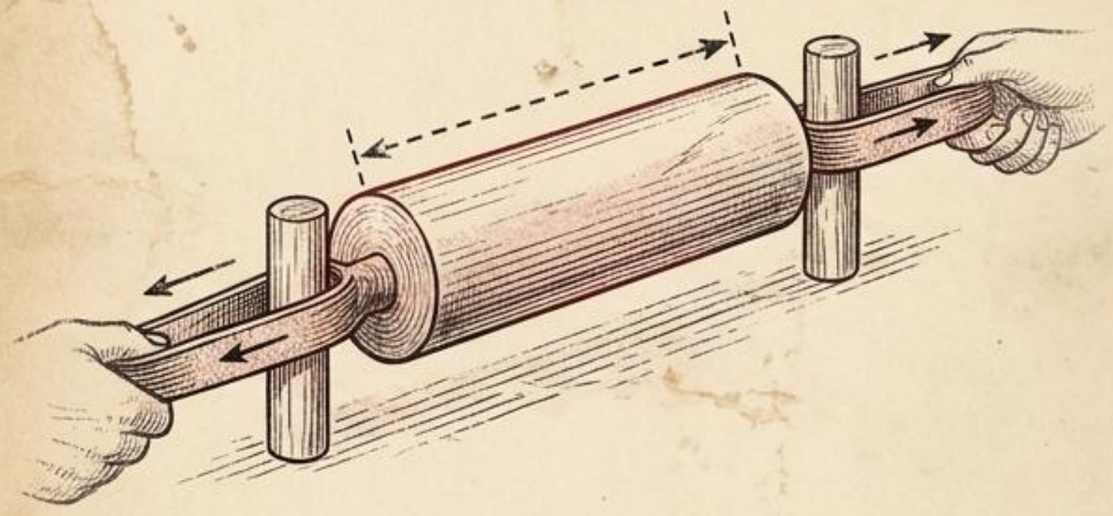

सान को दो सीधे खूंटों (pegs) पर रखें। चमड़े की पट्टियों को खींचकर जांचें कि यह सीधा चलता है या नहीं।

Step 2: तेज करने की तकनीक

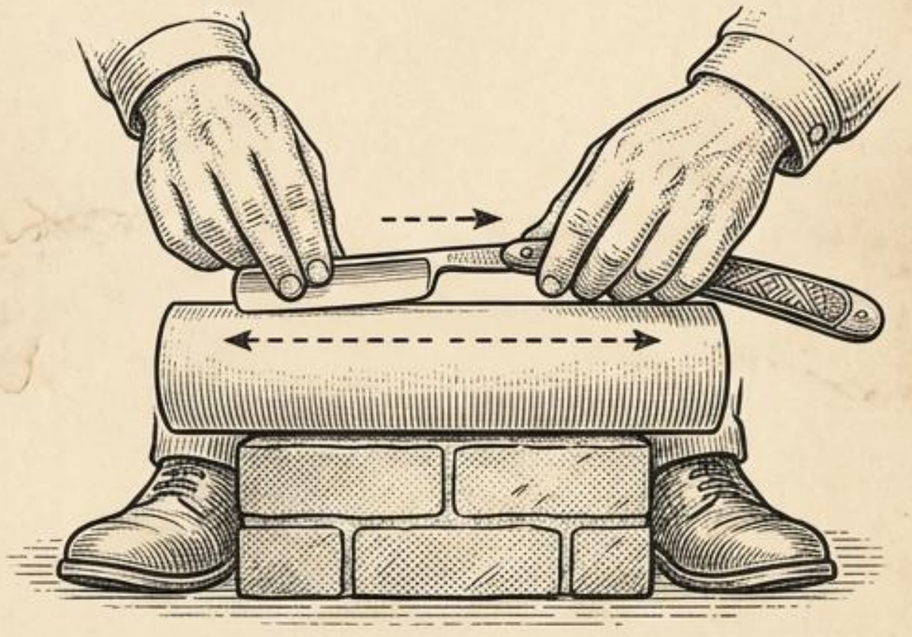

दाएं हाथ में रेज़र का हैंडल और बाएं हाथ के अंगूठे से ब्लेड पकड़ें। सान के नीचे लगी ईंट को दोनों पैरों से मजबूती से पकड़ें। ब्लेड को एक सिरे से दूसरे सिरे तक धीरे और हल्के से साफ करें।

दैनिक समस्या निवारण: काले किनारे

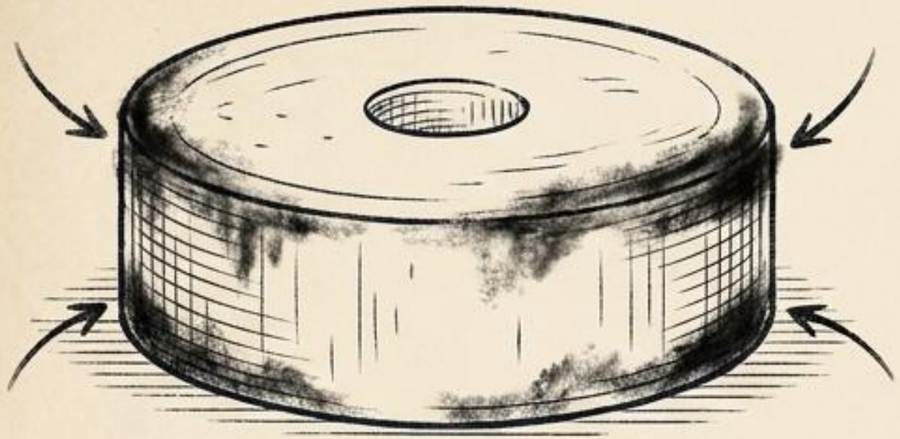

The Problem

समस्या: उपयोग के दौरान यदि सान के किनारे काले हो जाएं (San gets black on edges)।

The Solution

समाधान: रेज़र को तुरंत हटा दें। सान को नीचे रखी ईंट पर तब तक रगड़ें जब तक कि वह फिर से चमक (bright) न जाए।

असमान सान को समतल करना

स्थिति: यदि सान का आकार असमान (uneven) हो जाए।

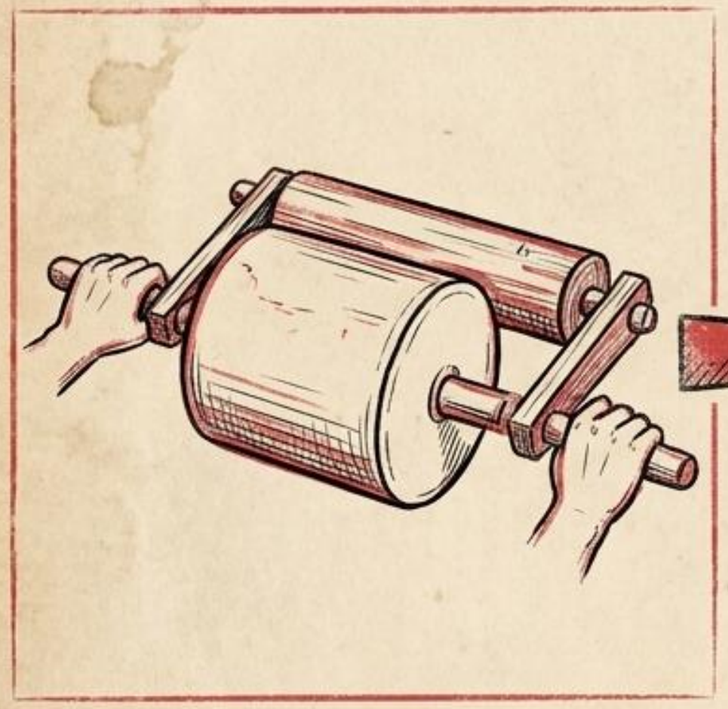

1. रोलर को सान से निकालें।

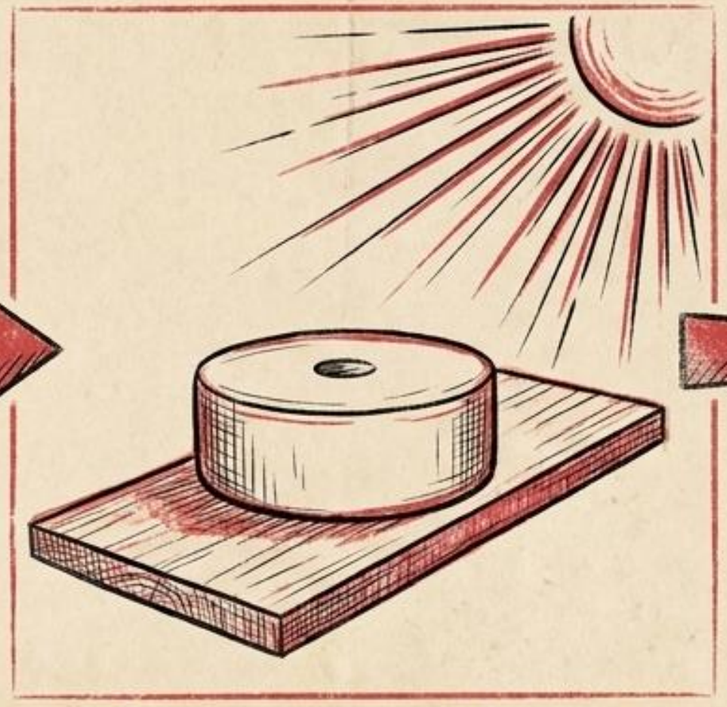

2. इसे एक समतल लकड़ी के तख्ते या सान की परिधि के बराबर पत्थर पर धूप में रखें।

3. थोड़ा ठंडा पानी (cold water) डालकर इसे ठंडा करें जब तक कि यह तख्ते पर ठीक से सेट न हो जाए।

उन्नत मरम्मत: दरारें और खराब किनारे

दरारें (Cracks): यदि सान में दरार आ जाए, तो गुहा (cavity) में एक गर्म लोहे की 'पट्टी' (hot iron patti) रखें और उसके ऊपर दूसरी गर्म पट्टी रखें। दरार जुड़ जाएगी।

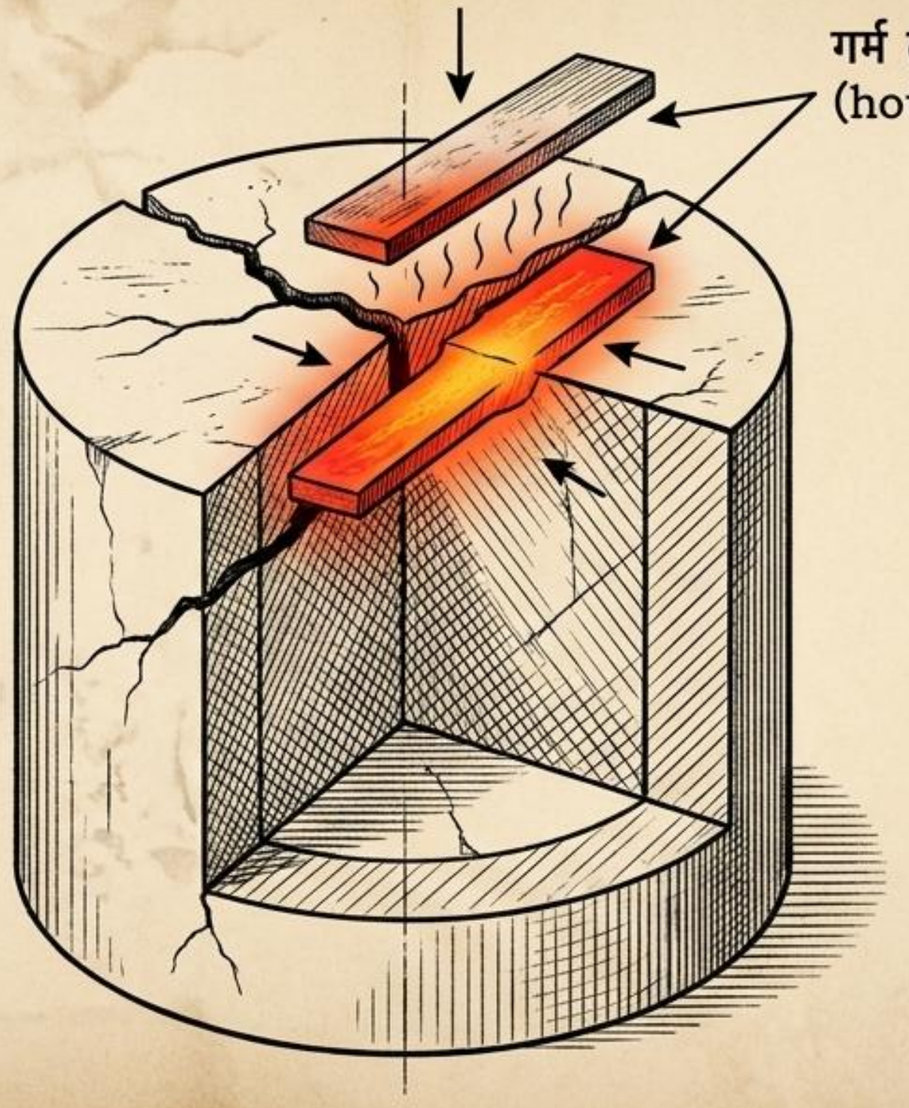

खराब किनारे (Spoiled Edges): सान को खूंटों पर रखें। नीचे ईंट के साथ एक गर्म लोहे की पट्टी पकड़ें और इसे धीरे-धीरे घुमाएं। किनारों को समतल करने के बाद, ठंडा पानी डालें और अंत में ईंट से किनारों को साफ करें।

ज़मीनी स्तर पर संचार

प्रशासन केवल अंग्रेजी दस्तावेज़ों तक सीमित नहीं था। जेल महानिरीक्षक ने यह सुनिश्चित किया कि ये सूक्ष्म निर्देश ज़मीनी कर्मचारियों तक पहुंचें।

कर्मचारियों और वार्डरों के व्यावहारिक मार्गदर्शन के लिए इन सटीक निर्देशों की एक प्रति उर्दू में भी संलग्न की गई थी। यह ज़मीनी स्तर पर प्रभावी संचार और औपनिवेशिक नौकरशाही की पहुंच को दर्शाता है।

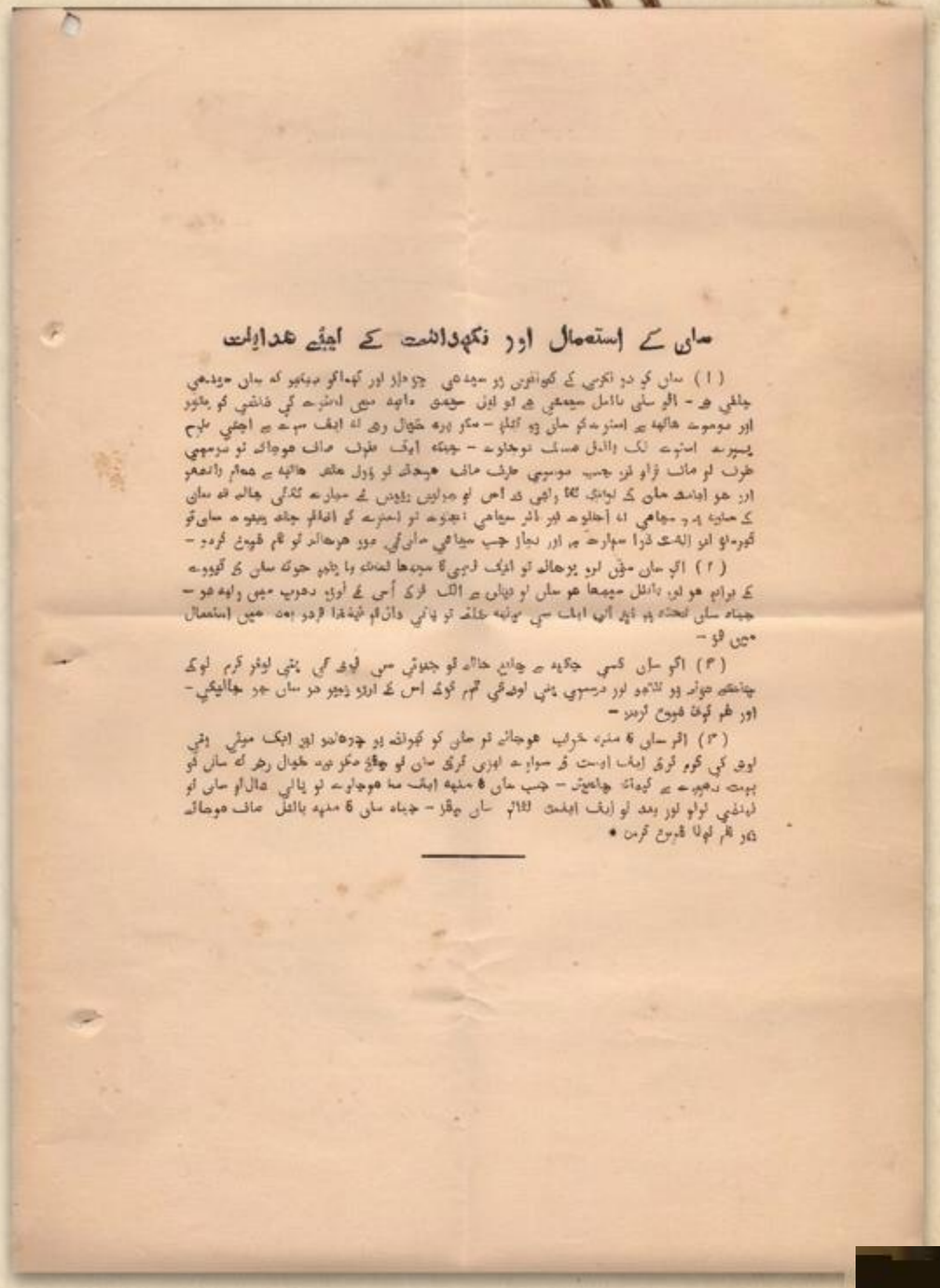

ساں کے استعمال اور نگہداشت کے لیئے ہدایات

(۱) ساں کو دو لکڑی کے کھونٹوں پر سیدھی چوڑائی اور گہرائی میں کہ ساں سیدھی چلتی ہے - اگر ساں بالکل سیدھی ہے تو اون حصہ ماتھہ میں استرے کی ڈنڈی کو بطور اور موموت ہاتھہ پر استرے کو ساں پر ٹکاو - مگر یہ خیال رہے کہ ایک سرے پر اچھی طرح پیسے استرے تک بالکل صاف ہوجاوے - جبکہ ایک طرف صاف ہوجائے تو دوسری طرف کو صاف کرو تو جب دوسری طرف صاف ہوجائے تو پہلی حالت ہاتھہ پر ہمیشہ رکھو اور جو اضافہ ساں کے کنارے کا رہتی ہے اس کو جیلوں رہنے کے میلے کے ٹکڑے جالے کہ ساں کے صابن پر رہ جاتی ہے اجلوے پر اثر سیاہی نہ ہووے تو استرے کی اضافہ جلد بیکار ساں کو کھرچ کر دو اور اچھے ذرا سہارے پر اور بجائے جب سیاہی ساں کی مور ہوجائے تو کام شروع کرو -

(۲) اگر ساں موٹی ہو یہ جالے تو ایک لکڑی کا سیدھا ٹکڑا یا چوبی جوتے ساں کے کھونٹے کے برابر ہو اور بالکل سیدھا ہو ساں کو دیاں پر الٹ کر کے اوپر دھرے میں رکھ دو - جبکہ ساں لگتے ہو تو ایک آدمی ایک سرے پر ٹکائے تو پانی ڈال کر تھوڑا تھوڑا کر دو بعد میں استعمال میں لو -

(۳) اگر ساں کسی جگہ سے جالے حالے تو جیوتی سے لوہے کی پتی لوہے کرم لوہے چاقو جوتے ہو تلاو اور درستی پتی لوہے کی تم کو اس کے اوپر زور دو ساں جو جالیکی - اور پھر کام شروع کرو -

(۴) اگر ساں کا منہ خراب ہوجائے تو ساں کو کھولنے پر چوڑائی اور ایک موٹی پتی لوہے کی کوم کرو ایک اوسط کو سوار اور ایسی کرو ساں کو چاقو مگر یہ خیال رہے کہ ساں کو بہت دھیرے سے کھولنا چاہیئے - جب ساں کا منہ ایک سا ہوجاوے تو پانی ڈال کر ساں کو ڈھانپ کر اور بعد کو ایک اضافہ لگائے ساں چکر - جبکہ ساں کا منہ بالکل صاف ہوجائے تو کام کرنا شروع کرو *

विश्लेषण: औपनिवेशिक नौकरशाही का DNA

विशेषता	गोला-बारूद नियंत्रण (1939)	'सान' रखरखाव (1937)
उद्देश्य	साम्राज्य की सुरक्षा, विद्रोह रोकना	संसाधन दक्षता, उपकरण संरक्षण
कार्यप्रणाली	सख्त ऑडिट, पुलिस सत्यापन	कदम-दर-कदम मैनुअल, DIY मरम्मत
प्रशासनिक दृष्टिकोण	व्यापक (Macro), बाहरी खतरे पर केंद्रित	सूक्ष्म (Micro), आंतरिक दिनचर्या पर केंद्रित

निचोड़: ब्रिटिश राज की ताकत केवल सैन्य बल में नहीं, बल्कि **'डेटा-संचालित निगरानी'** और **'अत्यधिक प्रक्रिया-उन्मुख** दिनचर्या' के इस दोहरे संयोजन में थी।

निष्कर्ष: साम्राज्य के दो पहलू

जेल महानिरीक्षक की डेस्क से निकले ये दो परिपत्र
इतिहास का एक अनूठा नज़रिया पेश करते हैं।

एक साम्राज्य की स्थिरता केवल बड़े युद्धों से नहीं तय होती थी...
बल्कि इस बात से भी होती थी कि वह छोड़ी गई एक भी गोली का हिसाब
कैसे रखता है, और एक साधारण उस्तरे के पत्थर को कैसे तराशता है।